P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारत में गांधी जी का प्रथम सत्याग्रह 'चम्पारण'

विमला कुमारी
शोध–छात्रा,
राजनीति विज्ञान विभाग,
जय नारायण व्यास
विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

सत्य एवं अहिंसा के पुजारी, भारत माँ के सपूत, विश्व मानवता के प्रतीक, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के सूत्रधार, सुकरात, ईसामसीह, भगवान गौतम बुद्ध तथा विवेकानन्द जैसी महान् विभूतियों के समतुल्य विश्व के महान् संतों में एक संत गांधीजी ऐसे महान् महापुरूष थे जिन्होंने सर्वप्रथम भारत को अन्याय और दुराचार, तिरस्कार से बचाने हेतु आंदोलन किये, उसी प्रकार चम्पारण (जो कि बिहार में स्थित जगह है) की जनता को भी अन्याय व अत्याचार से मुक्त करवाने हेतु गांधीजी ने अपना कर्तव्य समझकर चम्पारण सत्याग्रह (भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई) का अहिंसात्मक शुभारंभ किया जो एक ऐसा जन–चेतना का रूप है जो इससे पहले कभी भी नहीं हुआ था।

मुख्य शब्द : जन–चेतना, अन्याय, शोषण।

प्रस्तावना

गांधी जी का समग्र जीवन सत्य से सत्याग्रह तक की महागाथा है। अपने जीवन में उन्होंने सत्य के प्रयोग किये, दक्षिण अफ्रिका में उसे सत्याग्रह का रूप दिया और चम्पारण पहुंचकर उसकी परिणति हुई।

9 जनवरी 1915 को गांधी जी दक्षिण अफ्रिका से भारत लौटे। अमूमन विदेशों से स्वदेश लौटने वाले किसी भी व्यक्ति के पास घरेलू और व्यक्तिगत सामानों की एक लम्बी लिस्ट होती है, लेकिन गांधी जी के पास ऐसी कोई वस्तु नहीं थी। यदि साथ कुछ था तो एक विशाल अनुभव–कोश तथा संघर्ष और त्याग का वह मनोभाव जो उन्होंने दक्षिण अफ्रिका के अपने 22 वर्षो के प्रवास में जमा किया था। 1893 में भारत से चलकर दक्षिण अफ्रिका पहुँचे गाँधी और 1915 में दक्षिण अफ्रिका से चलकर भारत आए गांधी में जमीन आसमान का फर्क था। दक्षिण अफ्रिका सत्याग्रह की शक्ति देख चुका था, और अब सत्याग्रह की शुरूआत भारत में होनी थी, गांधी जी ने भारत में अपने राजनीतिक संघर्ष की शुरूआत चम्पारण से शुरू की।

चम्पारण में किसानों पर थोपी गई नील की खेती और अतिरिक्त कर उनकी कमर तोड़ रहे थे। शासन की क्रुरता के आगे विरोध के विकल्प समाप्त हो चुके थे। बात 1917 की है चम्परण के किसानों का शोषण दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था ब्रिटेन के शासकों ने उन पर तीनकठिया नाम की व्यवस्था थोप दी थी जिसके तहत उनसे उनकी जमीन के 15 जिसकी हिस्से पर जबरन नील की खेती करवाई जाती थी और साथ में कर भी देना होता था। जिसका पालन नहीं करने पर पिटाई, खेतों और घर की नीलामी जैसे गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ते थे।

ये नील की फसल चम्पारण में अंग्रेजों की नील की फैक्टरियों में जाएगी और सभी साहब आम के बगीचों व गन्ने के खेतों से घिरी आलीशान हवेलियों में रहते थे, लेकिन एक समस्या थी जूट या अफीम के निर्यात में अब मुनाफा नहीं रहा नील की डाई में फायदा तो था लेकिन जर्मनी की कृत्रिम डाइ के कारण ब्रिटेनी एकाधिकार को चुनौती मिल रही थी, जो नील 1892–97 में उत्तरी और पूर्वी भारत में 91,000 एकड जमीन पर उगाया जाता था वह 1914 में 8100 एकड तक जमीन तक सीमित हो गया था अधिकतर चम्पारण के आस–पास।

परन्तु जबसे प्रथम विश्वयुद्ध शुरू हुआ तब से अंग्रेजी राजशाही को ज्यादा संसाधन चाहिए उत्तरी मैदानी इलाके में पट्टेदारों को अन्य फसले उगाने के लिए अंग्रेज विवश कर रहे थे और पानी विवाह और मृत्यु पर कर वसूल रहे थे, पट्टेदार नेता राजकुमार शुक्ला और पत्रकार पीर–मोहम्मद मुनिश द. अफ्रिका में अपने राजनैतिक आन्दोलनों के लिए विख्यात गांधी को यहां लाना चाहते थे, वे सफल होते है। अप्रैल 11 को चम्पारण के रास्ते में गांधी मुजफ्फरपुर में रूककर गिरमिटया मजदूरों पर हुई क्रुरता के बारे में सुनते है।

अध्ययन का उद्देश्य

यह आन्दोलन आम आदमी को अन्याय, व स्वतंत्रता तथा शोषण से मुक्ति, जनता के विभिन्न प्रकार के भय को बाहर निकालकर जागृति (चेतना) पैदा करता है इस आन्दोलन के द्वारा ही निलयों के अत्याचार को, नील की खेती को व किसानों को उनकी वास्तविक स्थिति प्रदान की गयी अतः गांधी जी द्वारा अपनाये गये सत्य एवं अहिंसा व सत्यागृह के द्वारा ही बिट्रिश दासता को समाप्त किया गया था जिससे स्वतंत्रता–प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ अतः वर्तमान समय में गांधीजी द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर ही हम विभिन्न प्रकार की समस्याओं–आंतकवाद, परमाणुकरण निशस्त्रीकरण, साम्प्रदायिकता आदि को हल किया जा सकता है।

भारत में हुई पहल

15 अप्रैल 1917 जिस शाम गांधी चम्पारण के मोतिहारी पहुंचे उन्हें जसौल पट्टी गाँव में एक पट्टेदार के साथ हुई बदसुलूकी के बारे में पता चला। अगली सुबह वह उससे मिलने चल दिए। लेकिन आधे रास्ते में ही उन्हें जिला मजिस्ट्रेट का सम्मन दिया गया मैं आपको जिले से दूर रहने का आदेश देता हूँ अगली ट्रेन से आप यहाँ से चले जाए।

गाँधी जी ने मना कर दिया। आगे गाँधी ने बेतिया और मोतिहारी में डेरा लगाकर गांवों में जाने की योजना बनाई। 18 अप्रैल को गांधी को कोर्ट से बुलावा आया। गांधी ने सारे आरोप मान लिए और अपने व्यक्तव्य में कहा मुझे लगता है कि उनके बीच रहकर ही मैं उनकी सेवा कर पाऊंगा इसलिए में यहाँ से जा नहीं पाया।

मजिस्ट्रेट ने उनके जिला छोड़ने पर उन पर लगे आरोपों को हटा लिए जाने का प्रस्ताव रखा। गाँधी का उत्तर था 'जेल से वापस आने के बाद भी मैं चम्पारण को अपना घर बनाऊंगा। कुछ दिनों बाद आरोप हटा लिए गए। देश ने पहली बार सत्याग्रह की शक्ति का अहसास किया।

घटनाक्रम

11 अप्रैल 1917 से 4 मार्च 1918 तक

11 अप्रैल 1917 गाँधी जी मुजफ्फरपुर पहुंचे और चम्पारण के कमिश्नर एलएफ मोर्सहेड को पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने बताया कि वह स्थानीय प्रबन्ध के सहयोग से नील की खेती का अध्ययन करने आए है।

13 अप्रैल गांधी की खबर पाकर मोर्सहेड ने चम्पारण के जिला न्यायाधीश को पत्र लिखा, जिसमें गांधी की यात्रा को लेकर उन्हें सावधानी बरतने को कहा।

16 अप्रैल को गांधी जी जसौलपट्टी पहुंचे जहां मजदूरों ने मालिकों की अन्याय की शिकायत की, गाँधी को बीच रास्ते में एक सिपाही ने रोका वहां से मोतिहारी वापस हुए। जिला न्यायाधीश ने गांधी को अगली रेलगाडी से जिला छोड़ने के लिए कहा। गांधी ने मना कर दिया और वाइसराय को पत्र लिखा।

17 अप्रैल, साबरमती आश्रम को ब्रिटेनी सरकार द्वारा दी गई कैसर–ए–हिंद उपाधि लौटाने के लिए कहा।

18 अप्रैल को किसानों से गवाही लेनी शुरू की दोपहर को न्यायाधीश के सामने उपस्थित हुए ओर कहा कि वह जिला न्यायाधीश के आदेश को न मानने के लिए मजबूर है और चम्पारण में ही रूकेगें ।

20 अप्रैल को लेफ्टिनेंट गवर्नर की सलाह पर गांधी के खिलाफ कानूनी कार्यवाही रोक दी गई।

22 अप्रैल के बाद गांधी ने गाँवों की यात्रा करनी शुरू की।

25 अप्रैल को बेतिया के उप प्रभागी न्यायाधीश ने कहा गांधी रैयतों के लिए मुक्तिदाता है।

4 जून को गांधी रांची पहुंचे और लेफ्टिनेंट गवर्नर सर एडवर्ड गैट को किसानों के गवाह–पत्र सुपुर्द किए।

10 जून चम्पारण की कृषि जांच समिति का गठन हुआ। इसमें गांधी के अलावा भारतीय सिविल सेवा के चार ब्रिटेनी अफसर तथा केन्द्रिय सूबों के कमिश्नर एफजी स्लाई को जोडा गया।

3 अक्टुबर समिति ने अपनी रिपोर्ट पेश की। गांधी मोतिहारी की ओर चल दिए। 11 अक्टुबर को गांधी बेतिया पहुंचे जहां चार हजार लोग स्टेशन पर उनके आने का इन्तजार कर रहे थे। तथा 13 अक्टूबर को गांधी अहमदाबाद की ओर रवाना हुए।

नवम्बर माह में महादेव देसाई गांधी जी के सचिव बने।

4 मार्च 1918 : को गवर्नर जनरल ने चम्परण एग्रेरियन बिल पर हस्ताक्षर किए। इसके साथ तीनकठिया व्यवस्था का अंत हुआ।

बयानों को इक्ट्ठा किया

22 अप्रैल से शुरू करके आगे के कई महिनों तक गांधी असपास के गांवों के पट्टेदारों के बयान इकट्ठे करने में लग गए 14 जून तक 850 गांवों के 7000 से ज्यादा किसानों ने बयान दिए। इन्हें संकलित करके लेफ्टिनेंट गवर्नर सर एडवर्ड गैट को दे दिया गया। इन बयानों के आधार पर चम्पारण एग्रेरियन इन्क्वायरी कमेटी बनी जिसके चार भारतीय सिविल सेवा अधिकारियों व केन्द्रिय सूबों के कमिश्नर के साथ गांधी भी सदस्य थे।

काफी विचार–विमर्श के बाद कमेटी ने अक्टुबर में रिपोर्ट जमा की इस रिपोर्ट के बाद कमेटी ने अक्टुबर में रिपोर्ट जमा की इस रिपोर्ट के कारण चम्पारण एग्रेरियन एक्ट 1918 बना जिसमें जबरन कराई जाने वाली नील की खेती को खत्म कर दिया।

आज का चम्पारण

गांधी जी का वैश्विक नजरिया व्यक्ति के साथ–साथ समाज के नैतिक मुल्यों से जुडा था। धुम्रपान और शराब की कड़े तौर पर मनाही थी। बडहरवा लखनसेन में गांधी ने पहला स्कूल खोला था वहां के कार्यवाहक सुरेश सिंह अपने पिता से सुनी बात बताते है ''गांधी ने हुक्के के इस्तेमाल को रोकने के लिए विद्यालय के सामने एक पेड़ पर हुक्का लटका दिया था। उसके सौ साल बाद आज राज्य में शराब प्रतिबंधित है पर चम्पारण के युवाओं में बैरोजगारी व नशाखोरी तेजी से बढ़ी है।

स्थानीय वकील और सामाजिक कार्यकर्ता एम आलम कहते है मुझे लगता है कि अगर जल्दी कदम नहीं उठाया गया तो युवाओं का भविष्य खतरे में पड़ सकता है।

गांधी का अनुसरण करते हुए खुद आलम ने मई 2015 में गन्ना सत्याग्रह की शुरूआत की थी। इसका उद्देश्य गन्ना किसानों व कारखानों के मजदूरों को उचित मजदूरी मुहैया करवाना था।

निष्कर्ष

सत्याग्रह का सफलतम प्रयोग गांधीजी दक्षिणी अफ्रीका में कर चुके थे भारत में यह चम्पारण (बिहार) से प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार महावीर व बुद्ध की भूमि पर एक मसीहा का आगमन हुआ जिसने दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति को झुकने के लिए विवश कर दिया तथा पूरा देश चम्पारण को गांधीजी के माध्यम से पहचानने लगा देश में पहली बार ब्रिटिश सरकार को झुकना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप कमीशन गठित हुआ और सरकार ने न्याय, शक्ति तथा सत्य के आग्रह को स्वीकार किया व उसने 'तीनकठिया' कानुन समाप्त कर गांधीजी की टोली को 'नील के धब्बे' धोने का श्रेय प्रदान किया इस प्रकार इस आन्दोलन के द्वारा हमें गांधीजी के जादुई प्रभाव को जानने व पहचानने का अवसर मिला।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

शंकर दयाल सिंह, महात्मा गांधी सत्य से सत्याग्रह तक पृ.स. 17

डॉ. रवीन्द्र कुमार, ''स्वतत्रता संग्राम के गांधीवादी युग का संक्षिप्त परिचय'' पृ.स. 7–14

नन्द किशोर आचार्य, सत्याग्रह की संस्कृति पृ.स. 9, 52, 61

आशा शर्मा, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पृ.स. 40, 78

मनु शर्मा, गांधी लौटे पृ.स. 12

शंकरदयाल सिंह, गांधी और अहिंसक आंदोलन पृ.स. 6, 12, 27

के.एस. सक्सेना, गीता अग्रवाल : गांधी धर्म एवं लोकतंत्र पृ.स. 125–164